IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय रंगमंच और नेमिचन्द्र जैन

डॉ. सुधा पोद्दार (जाजोदिया)

सहायक आचार्य, हिन्दी

सारांश

रंगमंच कलात्मक अभिव्यक्ति का ऐसा माध्यम है जिसमें मनोरंजन का तत्व अन्य कलाओं की अपेक्षा सर्वाधिक होता है। नाटक मनोरंजन के साधन के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति का ऐसा स्वरूप है, जिसमें जीवन की नानाविध अनुभूतियों, उदात्त से लेकर क्षुद्रतम भावावेगों तथा भाव–दिशाओं एवं विविध शारीरिक एवं मानसिक प्रभावों का प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करते है। नाट्यालोचना नाट्यरचना से लेकर रंगमंच प्रदर्शन तक के सभी पक्षों के मूल्यांकन का एक साधन है, जिससे प्रत्येक पक्ष की स्वतः और समन्वित समीक्षा उसके कलात्मक पहलुओं का आकलन है। नाट्य जैसी क्षणभंगुर कला का गहन विश्लेषण या सूक्ष्म मूल्यांकन प्रायः बहुत कठिन कार्य होता है, इसलिए व्यावसायिक नाट्यलोचकों का प्रायः अभाव बना हुआ है। नेमिचन्द्र जैन एवं कुछ अन्य समीक्षक इसके अपवाद रहे, जिन्होंने नाट्यालोचना को नई दिशा एवं स्वरूप प्रदान किया।

रंगमंच के नए स्वरूप नाटक की कथावस्तु और प्रस्तुतिकरण के तरीकों में परिवर्तन के साथ–साथ नाट्य समीक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। नाट्य समीक्षा का मुख्य आधार नाट्य रचना है, जो रंगकर्म की सभी विधाओं के सम्मिलित स्वरूप में अपने उद्‌गार व्यक्त करती है। यह रंगकर्म से परस्पर संबद्ध है। भारतीय सृजनशील को अपनी नयी रंगदृष्टि विकसित करने के लिए प्राचीन और मध्ययुगीन परम्पराओं को गहराई से खोजकर वर्तमान जीवन से साक्षात्कार के संदर्भ में उनकी कलात्मक सार्थकता और प्रांसगिकता का सावधानी पूर्वक परीक्षण कर एक स्वतंत्र सोच विकसित करने आवश्यकता है। रंगकर्मी को यह समझना आवश्यक है कि परम्परा की पहचान के अभाव में सार्थक और जीवन से संरिलष्ट कलासृष्टि की समस्याएँ रंगमच से तीव्रतम है क्योंकि रंगमंच एक सामुदायिक विद्या है। (1) देश का जागरूक रंगकर्मी, अपने रंगकार्य को, परिवेश के जीवन्त अनुभव का, उसकी समस्या जटिलताओं, उलझावों और विशिष्ट परिणितियों का माध्यम बनाना चाहता है। अन्य सृजनशील कार्मिकों की भांति, उसके मन में व्यक्ति को और अन्य व्यक्तियों के साथ संबंधों को अपने विशिष्ट संदर्भ में देखने और सही स्वरूप में अन्वेषण करने तथा अपने कृतित्व में अभिव्यक्त करने को इच्छुक और आतुर है, जिसको आधार बनाकर नयी रंगदृष्टि का विकास करें। रंगकर्म के नवीन स्वरूप प्रस्तुति के दौर में रंगकर्मी पश्चिमी प्रयोगवादी पद्धतियों और दृष्टियों में उलझ सकता है, जिससे सतर्क रहना आवश्यक है।(2)

रंगशाला में विभिन्न वर्गों के दर्शक मंच पर प्रस्तुत नाटक की भावभंगिमाओं का एक साथ आस्वादन करते है तथा उनकी भावात्मक, आवेगात्मक एवं स्नावयिक प्रतिक्रियाएँ समानान्तर दिशा में प्रवाहित होती है।(3) भावात्मक एकता का रंगमंच से बड़ा कोई दुसरा माध्यम नहीं है। रंगकला मनुष्य के मूल आदिम आवेगों और प्रवृतियों को जागृत करके एक सामूहिक सूत्र में बांधती है। नाट्यलेखन में रचनाकार की मौलिक कल्पलाशीलता एवं प्रतिभा का प्रतिरूप प्रकट होता है, जिसे निर्देशक अपने रंगमंचीय अनुभव के आधार पर विविध संशोधन करके संतुलित नियमन और प्रक्षेपण द्वारा परिमार्जित करके अभिनय योग्य बनाता है। नाटक में रचनाकार के अतिरिक्त अभिनेता, निर्देशक, रंगशिल्पी तथा दर्शक वर्ग की उपस्थिति आदि तत्व रहते है, जो अन्य कला स्वरूपों में संभव नहीं होते इसलिए नाट्यलोचना केवल लिखित नाटक की न होकर नाट्य प्रदर्शन के समन्वित स्वरूप की होती है। नाटक दृश्य काव्य है, जिसमें कार्य व्यापार, ध्वनि और गति का स्वरूप निहित होता है, जो अभिनेता के माध्यम से उजागर होता है। नाट्यलोचक को इन दोनों स्तरों के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है। नाट्यलोचना नाटक व रंगमंच की कमियां निकालने का एक माध्यम नहीं है बल्कि नाटक प्रदर्शन से जुड़ी समस्त विधाओं की उपलब्धियों व सार्थकताओं को

प्रकाश में लाने का माध्यम भी है। समीक्षा के माध्यम से उदीयमान कल्पनाशील रचनाकारों का सही ढ़ंग से मार्गदर्शन भी होता है, जिससे उनमें कल्पनाशीलता एवं सृजनशीलता के प्रति उत्साह बढ़ता है। (4)

नाटयशास्त्र एवं दूसरे ग्रंथों में प्रतिपादित सिद्धान्तों में बहुत मतभेद एवं अस्पष्टताएँ व्याप्त है, जिनके आधार पर नाट्यप्रदर्शनों का मूल्यांकन संभव, वांछनीय और प्रासंगिक नहीं है इसलिए नई कसौटियां विविध प्रयोगों एवं प्रस्तुतियों के अनुभव के आधार पर ही विकसित की जाती है। नाट्यलोचक का दायित्व नाट्य रचना एवं प्रदर्शन की बारीकियों को समझने वाले व्यक्तियों द्वारा किए जाने से उसकी सार्थकता प्रभावी रहेगी।(5) इन सभी समस्याओं और अंतर्विरोधों को समझते हुए नेमिचन्द्र जैन ने नाट्यालोचना के मानदण्डों में साहित्यिक–काव्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ अभिनेता की कलामूलक सृजनात्मक प्रतिभा को जोड़कर अभिनय स्वरूप प्रदान किया। अभिनेता के अभिनय कौशल को मूर्तरूप प्रदान करने में अनेक सृजनशील कर्मी एवं शिल्पी सहायक होते है। इन सभी पक्षों के समन्वित स्वरूप को नेमिचन्द्र जैन ने नाट्यालोचना का आधार माना तथा इस सभी तत्वोंकी कमियों को सुझाव स्वरूप में प्रस्तुति पर बल दिया। (6) उनके नाट्यालोचना के समस्त कार्य में इस स्वरूप को अपनाया गया और निर्भीकता एवं ईमानदारी से वे इस कार्य को करते रहें।

नेमिचन्द्र जैन ने नाट्य समीक्षा को उसके शास्त्रीय, पुस्तकीय और बने बनाए ढांचे से बाहर निकालकर सीधे–सीधे उसके प्रस्तुति पक्ष को रेखांकित किया। उन्होंने नाटको के साहित्यिक मूल्यों की गहन परख की और अपने विश्लेषण का आधार बनाया। पूर्व के लिखित नाटकों की रंगमंचीय संभावनाओं को दृष्टिगत रखकर उनका संपादन करके साहित्य जगत को समृद्ध करने की चेष्टा की। एक व्यावहारिक रंगकर्मी न होते हुए भी वे नाटकों के प्रदर्शन के व्यवहारिक पक्षों को निपुणतापूर्वक आकलन करके समीक्षा करते थे। उन्होंने नाट्यालोचना पद्धति को नवीन स्वरूप देकर स्थापित किया। देश–विदेश के महत्वपूर्ण नाटकों का हिन्दी अनुवाद व रूपान्तर करके नाट्य जगत में व्याप्त कमी को पूरा करने का प्रयास किया जिससे हिन्दी रंगमंच में व्याप्त व्यवधान को समाप्त करने में सहायता मिली। अपने सृजनात्मक साहित्य के अतिरिक्त वे भारतीय संस्कृति को सृजनात्मक सामर्थ्य और आध्यात्मिक वैभव के मानदण्ड के साथ मानवीय क्रीड़ा और मनोरंजन की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति मानते थे। रंगमंच पर प्रदर्शित नाटक प्रेक्षकों का रंजन करके सफल होता है तथा अपने उद्देश्य को पूरा करता है।(7) कलात्मक अभिव्यक्तियों का अनुशीलन जितनी तीव्रता से व्यापक स्वरूप में अधिकाधिक व्यक्तियों का एक साथ रंगमंच पर नाट्याभिनय द्वारा होता है, उतना अन्य माध्यमों से संभव नहीं है।

रंगकर्म में रचना में निहित तत्वों के साथ निर्देशक का प्रबंधन कौशल और कलाकारों की सजीव प्रस्तुति, आलोचना के संदर्भ स्वरूप बनते है, इसमें रंगमंच का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार नाट्यालोचना विधा एक सृजनात्मक लेखन पर निर्भरता और सम्बन्द्धता को भी अनिवार्य मानती है। सार्थक आलोचना सृजनात्मक लेखन से स्वयं आलोकित होकर उसे प्रतिबिम्बित करती है। कभी–कभी ऐसे अर्न्तदृष्टि के क्षण आते है, जब एक रचना का आलोक पूरे परिदृश्य को ही प्रकाशित कर देता है, किन्तु ऐसी अर्न्तदृष्टि प्रत्येक आलोचक को हर समय सुलभ नहीं होती। (8) नाटक एक दृश्य काव्य है जिसकी प्रस्तुति के लिए रंगमंच का विशेष महत्व है। नाटक की संपूर्णता रंगमंच पर ही प्राप्त होती है। रंगमंच एक ऐसा स्थल है जहां नाटक मंचन के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी सम्पन्न होने लगे, जिसके लिए साज सज्जा एवं विद्युत व्यवस्था के साथ ध्वनि प्रसारण यंत्रों का स्तर भी आधुनिकीकरण के माध्यम से सम्पादित किया गया। नेमिचन्द्र जैन का यह मत रहा कि नाटक में आम भाषा में बोले और समझ में आने वाले शब्दों का समावेश उसे सार्थक स्वरूप प्रदान करता है और दर्शक को पूरा आनन्द प्राप्त होता है। यदि दर्शक भाषा को ठीक प्रकार से नहीं समझ सका तो उसका रंगदर्शन उद्देश्य निरर्थक हो जाता है। (9)

नाटक और रंगमंच के परिपेक्ष्य में नेमिचन्द्र जैन ने स्वाधीनता पूर्व और पश्चातवर्ती काल की नाट्यालोचना परम्पराओं का चित्रण और उनमें विविध परिवर्तनों की आवश्यकता दर्शाई। नाटक और रंगमंच के परस्पर संबंध और अन्योन्याश्रितता भी बताई। समय के साथ रंगकर्म के बदलते मानदण्डों के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का विवेचन भी किया। रंगमंच को नया स्वरूप प्रदान करने में शासकीय और अशासकीय प्रयासों का भी विस्तार से विवरण दिया गया। नाट्य समीक्षा में बदलाव का कारण नाटकों की बदलती शैली और रंगमंच के व्यवस्थित स्वरूप को आधार बनाकर चित्रित किया गया। नाट्य समीक्षक वर्ग और उनकी कमियों का आकलन करते हुए उन्हें नाटक और रंगमंच से जुड़े सभी पहलुओं की प्रयोगात्मक जानकारी होने की आवश्यकता दर्शायी। नाट्यालोचना में काव्यात्मक नाट्यानुभूति, मूल्य जागरूकता संबंधी समस्याएँ, नाटकों के माध्सम से विभिन्न समस्याओं का संप्रेषण और रंगमंच की व्यावहारिकता आदि विषयों पर सकारात्मक स्वरूप की आवश्यकता दर्शायी गई है। फिल्म और टेलीविजन के बढ़ते प्रभाव से नाटक और रंगमंच की ओर दर्शकों की निरन्तरता बनाए रखने के लिए सापेक्ष स्वरूप अपनाने की आवश्यकता दर्शाई गई है, क्योंकि रंगमंच सजीव नाट्यानुभूति प्रस्तुत करने का एकमात्र स्वरूप है इसलिए आपसी वैमनस्य भुलाकर दर्शकों को सही जानकारी देनी आवश्यक है जिससे उनकी निरन्तरता बनी रहे और रंगमंच सदैव क्रियाशिल बना रहे। रंगकर्म से जुड़े नाटककार, निर्देशक और रंगमंच संचालन से जुड़े व्यक्तियों को कठिन परिश्रम एवं एकजुटता की आवश्यकता दर्शायी गई है।

नेमिचन्द्र जैन ने भारतीय रंगमंच पर प्रदर्शित नाटकों की समीक्षा के लिए मानदण्ड भी निर्धारित किए और रचना व प्रस्तुति के विविध आयामों को समन्वित स्वरूप में प्रस्तुत करने का तरीका भी निकाला जिससे हिन्दी रंगमंच को मजबुत आधार मिला और नाट्य प्रदर्शनों की संख्या में वृद्धि होने के साथ दर्शकों को भी रंगमंच की ओर प्रेरित करने के दायित्व का भी निर्वाह किया। उन्होंने नाटक के सैद्धान्तिक व व्यावसायिक पक्षों की पूर्ण जानकारी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्राध्यापक रहते हुए अर्जित की थी और रंगमंच के समस्त पक्षों को बारीकी से समझा था क्योंकि रंगमंच का मूल्यांकन साहित्यिकता अभिनेता और रंगमंचोपयुक्ता को पृथक खण्ड में बाँटकर करना संभव नहीं हो सकता। हिन्दी साहित्य और भारतीय रंगमंच के लिए उनके अमूल्य योगदान का मूल्यांकन करना किसी एक व्यक्ति या संस्था के लिए संभव नहीं है। यह निर्विवाद सत्य है कि उन्होंने भारतीय रंगमंच को विविध आयामों व सूझबूझ से संकट के दौर से बाहर निकाला है, जो एक व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा कार्य था।

संदर्भ सूची

1. नेमिचन्द्र जैन (1998) मेरे साक्षात्कार पृ. 132–151
2. नेमिचन्द्र जैन (2008) रंगदर्शन पृ 77–197
3. नेमिचन्द्र जैन (1993) रंगदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन
4. विश्वनाथ शर्मा (1979) हिन्दी रंगमंच का उद्‌भव और विकास
5. डॉ. चन्द्रप्रकाश सिंह, हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की समीक्षा, प्रथम खण्ड
6. नेमिचन्द्र जैन (1989) अधूरे साक्षात्कार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (द्वितीय संस्करण)
7. सं. सुरेश शर्मा (2004) रंगयात्रा, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली (नवीन संस्करण)
8. नेमिचन्द्र जैन (1998) मेरे साक्षत्कार, पृ. 69–72
9. नेमिचन्द्र जैन (2008) रंगदर्शन, पृ. 177–180